E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(3): 61-68
Received: 21-05-2022
Accepted: 25-06-2022

अविनाश आर्य
बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, दिल्ली, भारत

रचना ग्रोवर
बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
अविनाश आर्य
बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, दिल्ली, भारत

हरियाणा में शैक्षणिक विषमता : शिक्षा में लिंग अंतर का एक संक्षिप्त अध्ययन

अविनाश आर्य, रचना ग्रोवर

सारांश

शिक्षा या साक्षरता ; स्थानीय, राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर जीवन की गुणवत्ता को उन्नत करने तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और वित्तीय प्रगति का आकलन करने के लिए एक आवश्यक संकेतक है। यह देश के प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक होता है कि वह अपने राष्ट्र की अज्ञानता और पिछड़ेपन से रक्षा करें। यह एक प्रकार से अंधेरे में प्रकाश जैसा कार्य करता है इसलिए मनुष्य के लिए शिक्षा का महत्व लगातार बढ़ रहा है। तथापि इसका समाज, धर्म, लिंग, जाति, आर्थिक स्थिति से संबंध होने के कारण इसका प्रभाव अलग अलग होता है। उपस्थित लेख भारत की जनगणना और हरियाणा की प्राथमिक जनगणना 2001-11 के सार से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जिसमें हरियाणा राज्य में शैक्षणिक प्राप्ति में महिला और पुरुष आबादी के बीच मौजूदा अंतरों का आकलन किया गया है। साक्षरता लैंगिक असमानता की गणना असमानता सूचकांक द्वारा की गई है। इसमें यह पाया गया है कि वहां जिला स्तर पर साक्षरता दर में व्यापक स्तर पर अंतर देखने को मिलता है। अधिक अवसरों के कारण तथा जागरूकता के साथ-साथ स्कूली शिक्षा तक पहुंच के कारण पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक अवसर प्राप्त हुए जिसके कारण सभी जिलों में महिलाओं की तुलना में पुरुषों की साक्षरता अधिक पाई जाती है।

कूट शब्द: हरियाणा में शैक्षणिक विषमता, शिक्षा में लिंग अंतर, शिक्षा या साक्षरता

भूमिका

शिक्षा समाज के मनुष्य को इस योग्य बनाती है कि वह समाज में व्याप्त समस्याओं, कुरीतियों, गलत परंपराओं के प्रति सचेत होकर उसकी आलोचना करें और ऐसे धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन होता जाता है | जिस प्रकार समाज शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है तो ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करती हैं चाहे वह आर्थिक हो, राजनीतिक हो, या चाहे सांस्कृतिक स्वरूप हो |

वेंकटरायप्पा ने शिक्षा व समाज के संबंध को स्पष्ट करते हुए लिखा है- "शिक्षा समाज के बालकों का सामाजिकरण करके उसकी सेवा करती है इसका उद्देश्य युवकों को सामाजिक मूल्य में विश्वासों और समाज के प्रति मानव को आत्मसात करने के लिए तैयार करना और उनको समाज की क्रियाओं में भाग लेने के योग्य बनाना है |" सीखने की एक उपयुक्त प्रक्रिया न केवल ज्ञान, दक्षता, गरिमा, संवैधानिक अधिकारों और दायित्वों के प्रति के माध्यम से समाज को सशक्त बनाती है, बल्कि दमन, वैराग्य और अन्याय के प्रति आंतरिक भावना का संचार भी करती है। संस्कृत में पुरानी कहावत "विद्या बिहिन पाशु"

का अर्थ है कि अनपढ़ व्यक्ति बिना सींग और पूंछ वाले जानवर और पृथ्वी पर बोझ के समान है । निस्संदेह, शिक्षा का स्तर किसी भी देश की सामाजिक और आर्थिक उन्नति को दर्शाता है जो न केवल बेहतर और अधिक रोजगार के सृजन के माध्यम से कमाई की संभावनाओं को बढ़ाता है बल्कि लिंग-आधारित भाई-भतीजावाद को मजबूत करके जीवन स्तर को उन्नत करता है। विश्व स्तर पर, यह तथ्य स्वीकार किया जाता है कि 'समानता की संस्कृति' को केवल शिक्षा के माध्यम से लाया जा सकता है, लेकिन जब ज्ञान की इन किरणों को केवल जनसांख्यिकी के एक टुकड़े के लिए निर्देशित या संरक्षित किया जाता है, तो यह निरंकुशता और प्रभुत्व का पोषण करता है। साक्षरता न केवल ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया है बल्कि यह सीखने की निरंतर प्रक्रिया है । यह पूरे सांप्रदायिक ढांचे में अहिंसक और मिलनसार संबंधों के सामंजस्य के साथ गरीबी और मनोवैज्ञानिक एकांतवास के उन्मूलन में मदद करता है। इसका कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं (कम प्रजनन क्षमता, मृत्यु दर, रुग्णता, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार) के साथ आशावादी और घनिष्ठ संबंध है, जो अपनी क्षमता और गुणों की पहचान के माध्यम से किसी व्यक्ति या सामूहिक के जीवन को बेहतर ढंग से आकार देने के लिए जिम्मेदार हैं। यद्यपि शिक्षा सीधे समाज में प्रगति उत्पन्न नहीं करती है, फिर भी इसकी कमी विकास प्रक्रिया में बाधा बन सकती है।

महिलाएं समाज की संस्थापक खंड हैं और वे न केवल किसी समाज या राष्ट्र की विकास प्रक्रिया में भाग लेती हैं बल्कि सभ्य परिवेश को समग्र रूप से तेज करने में भी मदद करती हैं। आमतौर पर बालिकाओं के बारे में यह कहा जाता है कि यदि हम एक कन्या को स्कूली शिक्षा के अवसर प्रदान करते हैं, तो वह दो परिवारों के कई सदस्यों (अपने और ससुराल वालों) को शिक्षित करेगी। एक राष्ट्र तभी प्रगति करेगा जब महिला के साथ पुरुषों के समान व्यवहार और शिक्षित किया जाएगा । यह एक सामान्य धारणा भी है कि एक साक्षर मां अनपढ़ की तुलना में अपने बच्चों की बेहतर संभावनाएं सुनिश्चित कर सकती है । मौजूदा लिंग अंतर और सीखने में विसंगति महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की ओर इशारा करती है। समाज में महिला निरक्षरता की उच्च व्यापकता इस बेहतर आधे के लिए कठोर अज्ञानता को दर्शाती है। निःसंदेह, शिक्षा में लैंगिक पक्षपात हर जगह मौजूद है, चाहे वह स्कूल में नामांकन के लिए अवसर और सामर्थ्य हो या सीखने में किसी भी स्थिति की प्राप्ति हो। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में प्रारंभिक शिक्षा से लेकर किसी भी स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने की संभावना कम होती है। टिंकर और ब्रामसेन (1975) के अनुसार, नकारात्मक सांस्कृतिक रुख, कम दायरे और एक स्थापित में लड़कियों की शिक्षा का महत्व एक राष्ट्र की मौद्रिक व्यवस्था और स्कूली शिक्षा के तरीके तीन प्रमुख पहचाने गए बाड़ हैं जो महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धता और पहुंच को सीमित करते हैं। यद्यपि भारत के संदर्भ में शिक्षा को सभी के लिए एक मौलिक अधिकार बताया गया है, कई सामाजिक और आर्थिक निर्धारकों के साथ-साथ सांस्कृतिक मानकों में निहित सामुदायिक और पारिवारिक रुख का महिला सीखने की संभावनाओं के विनिर्देश के संबंध में शाश्वत नियंत्रण है।

उद्देश्य

वर्तमान कार्य का उद्देश्य निम्नलिखित उद्देश्यों की तलाश करना है:

1. 1971 से 2011 तक भारत की तुलना के साथ राज्य में साक्षरता की अस्थायी प्रगति की जांच करना।
2. हरियाणा में जिला स्तर पर साक्षरता में मौजूदा लिंग आधारित असमानताओं का निरीक्षण करना।
3. स्थानिक भिन्नता के पीछे जिम्मेदार कारकों की पहचान करना
4. अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता दर ।

अध्ययन क्षेत्र

हरियाणा राज्य भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है, जिसका भौगोलिक विस्तार 27040' से 29042' उत्तरी अक्षांश और 74054' से 77040' पूर्वी देशांतर तक है। यह 1 नवंबर 1966 को अस्तित्व में आया। इसमें 44,212 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र शामिल है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 1.34 प्रतिशत शामिल है। (चित्र-1)

स्रोत: भारत की जनगणना, 2011

चित्र 1: अध्ययन क्षेत्र का स्थान मानचित्र

परिणाम और चर्चा

भारत और हरियाणा में साक्षरता प्रगति:

शिक्षा गरीबी को कम करने के साथ-साथ अर्थव्यवस्था को सबसे अधिक लाभदायक रिटर्न देती है और यदि यह शैक्षिक निवेश गरीबों, वंचितों, विशेष रूप से महिलाओं के लिए किया जाता है, तो यह एक घर, क्षेत्र और एक राष्ट्र के सामाजिक और वित्तीय परिदृश्य को बेहतर बनाने में मदद करेगा। न केवल सामाजिक और आर्थिक, बल्कि जनसांख्यिकी भी शिक्षा के स्तर से प्रभावित होती है क्योंकि यह पाया जाता है कि शिक्षा के माध्यम से जागरूकता के परिणामस्वरूप शादी की उम्र बढ़ने के कारण प्रजनन दर में गिरावट आई है। इस तरह शिक्षा ने महिलाओं में स्वाभिमान, आत्मविश्वास और निडरता पैदा की है।

भारत और हरियाणा में साक्षरता दर में लिंग-वार प्रगति को तालिका 1 में दिखाया गया है। 1971 की जनगणना से संबंधित तथ्य बताते हैं कि भारत की कुल जनसंख्या में केवल 34.45 प्रतिशत लोग ही साक्षर थे जबकि हरियाणा में साक्षरता दर 25.71 प्रतिशत थी। 1991 में, देश और राज्य की समग्र साक्षरता दर क्रमशः 52.21 और 55.85 प्रतिशत दर्ज की गई थी, जिसमें 1971 की तुलना में भारत में 17.76 प्रतिशत और हरियाणा में 30.14 प्रतिशत का सुधार हुआ ।अगले जनगणना वर्ष में भी भारत और हरियाणा में 12.62 और 12.06 प्रतिशत की वृद्धि के साथ साक्षर लोगों का एक बड़ा अनुपात दर्ज किया गया। 2011 की जनगणना के दस्तावेज़ीकरण से पता चलता है कि राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर सभी श्रेणियों (कुल, पुरुष और महिला) ने साक्षर लोगों के संबंध में महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है। इस सर्वेक्षण ने पुष्टि की है कि भारत में 74.04 प्रतिशत लोग (82.14% पुरुष और 65.46% महिला) साक्षर हैं, जबकि इसी अवधि के दौरान राज्य के आंकड़े 75.55 प्रतिशत (84.05% पुरुष और 65.94% महिला) हैं।

अवलोकन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि 1971 से 2011 तक देश और राज्य दोनों में, महिलाओं के खिलाफ लिंग अंतर

लगातार बना हुआ है। हालांकि 1971 में यह अंतर अतीत से वर्तमान मतदान तक कम हो गया है, भारत और हरियाणा में पुरुष महिला साक्षरता अंतर 23.99 प्रतिशत और 28.58 प्रतिशत था और 2011 में इसे उस क्रम में 16.68 और 18.11 प्रतिशत के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, फिर भी सबूत बताते हैं कि तुलनात्मक रूप से पुरूषों की तुलना में महिला साक्षरता कम प्रगतिशील रही है (तालिका 1) । हालाँकि, शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का मूल अधिकार है, फिर भी यह स्थान, समय, आयु और लिंग पहलुओं से अत्यधिक प्रभावित है। आज़म और किंगडन (2011) ने खुलासा किया कि शिक्षा में लिंग अंतर सीखने के खर्च का परिणाम है जो आमतौर पर लड़कों के पक्ष में रहता है और यह शहर की तुलना में ग्रामीण इलाकों में अधिक प्रचलित है।

तालिका 1: भारत और हरियाणा में साक्षरता दर

जनगणना वर्ष	भारत			पुरुष-महिला साक्षरता अंतर	हरियाणा			पुरुष-महिला साक्षरता अंतर
	कुल	महिला	पुरुष		कुल	महिला	पुरुष	
1971	34.45	21.79	45.96	24.17	25.71	10.32	38.90	28.58
7981	43.57	29.76	56.38	26.62	37.13	20.04	51.86	31.82
1991	52.21	39.29	64.13	24.84	55.85	40.47	69.1	28.63
2001	64.83	53.67	75.26	21.59	67.91	55.73	78.49	22.76
2011	74.04	65.46	82.14	16.68	75.55	65.94	84.05	18.11

स्रोत: भारत की जनगणना

साक्षरता का जिलावार दृश्य: हरियाणा में साक्षरता की स्थिति, 2001

वर्तमान समय में शिक्षा और विकास की दृष्टि से हरियाणा का आर्थिक रूप से आधुनिक समाज है। 2001 में, कुल मिलाकर 67.91 प्रतिशत लोग साक्षर थे जबकि पुरुषों और महिलाओं के लिए साक्षरता दर क्रमशः 78.49 और 55.73 प्रतिशत थी, जिसमें लिंग अंतर 22.76 प्रतिशत था। स्थानिक विश्लेषण से पता चलता है कि दो जिलों अर्थात् फरीदाबाद और गुड़गांव में साक्षरता दर समग्र श्रेणी में उच्च (76% से अधिक) है। 21 जिलों में से, सबसे अधिक दस जिलों, पंचकुला, अंबाला, यमुना नगर, कुरुक्षेत्र, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, झज्जर, महेंद्रगढ़ और रेवाड़ी में साक्षरता दर 68 से 76 प्रतिशत के बीच है। राज्य का पूरा पश्चिमी भाग फतेहाबाद जिले को छोड़कर साक्षरता दर की निम्न श्रेणी में आता है जहाँ साक्षरता दर बहुत कम पाई जाती है जिसके बाद कैथल, मेवात और पलवल जिले आते हैं। समान गणना के लिए पुरुष जनसंख्या के संदर्भ में सबसे अधिक पंद्रह जिले (पंचकूला, अंबाला, यमुना नगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, झज्जर, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, फरीदाबाद, गुड़गांव, भिवानी और हिसार) को समूह में रखा गया है। उच्च साक्षरता दर वाले हैं जबकि पांच जिले (सिरसा, फतेहाबाद, जींद, कैथल और पलवल) मध्यम वर्ग में हैं। केवल मेवात जिले में ही साक्षरता दर कम पायी जाती है। जहाँ पुरुष जनसंख्या के संबंध में एक भी जिला बहुत कम साक्षरता दर वाला नहीं पाया जाता है, वहाँ महिला साक्षरता का दृश्य इसके बिल्कुल विपरीत है और पूरा राज्य निम्न या बहुत निम्न श्रेणी में आता है। पश्चिमी, दक्षिण-पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी हरियाणा के बारह जिलों (सिरसा, फतेहाबाद, जींद, कैथल, हिसार, भिवानी, करनाल, पानीपत, झज्जर, महेंद्रगढ़, पलवल और मेवात) का एक समूह बहुत कम साक्षरता दर के साथ लुढ़क गया है। शेष नौ जिलों में महिला साक्षरता का प्रतिशत कम है ।

हरियाणा में साक्षरता की स्थिति, 2011

चित्र 3 से पता चलता है कि 2011 की जनगणना के दौरान राज्य की औसत साक्षरता 75.55 प्रतिशत दर्ज की गई है। केवल एक जिला अर्थात् मेवात 60 प्रतिशत से कम साक्षरता दर की श्रेणी में आता है जबकि आसपास के फतेहाबाद जिले में 60-68 प्रतिशत साक्षर आबादी है। आठ जिलों, विशेष रूप से, कैथल, करनाल, पानीपत, जींद, सिरसा, हिसार, भिवानी और पलवल ने 68-76

प्रतिशत की साक्षरता दर दर्ज की है और पंचकुला, अंबाला, यमुना नगर, कुरुक्षेत्र, सोनीपत, रोहतक, झज्जर, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, गुड़गांव और फरीदाबाद जिले में 76 प्रतिशत से अधिक की साक्षरता दर दर्ज की गई है। । पुरुष साक्षरता के मामले में, मेवात जिले (मध्यम साक्षरता) को छोड़कर पूरे हरियाणा ने उच्च साक्षरता दर्ज की है। 2001 की तुलना में 2011 में महिला साक्षरता में भी सुधार देखा गया है। जिला गुड़गांव को उच्च साक्षरता समूह में रखा गया है, इसके बाद नौ जिलों पंचकुला, अंबाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, सोनीपत, रोहतक, झज्जर, रेवाड़ी और फरीदाबाद को मध्यम साक्षर जनसंख्या वाले समूह में रखा गया है ।

करनाल, पानीपत, जींद, सिरसा, हिसार, भिवानी और महेंद्रगढ़ जिलों में साक्षर महिलाओं का अनुपात कम है जबकि फतेहाबाद, कैथल, मेवात और पलवल जिलों को बहुत कम साक्षरता वर्ग में रखा गया है। स्थानिक पैटर्न दर्शाता है कि राज्य के इक्कीस जिलों में से ग्यारह जिले उच्च साक्षरता दर की श्रेणी में आते हैं और राज्य की राजधानी चंडीगढ़ के आसपास के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को कवर करते हुए दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र (दो जिलों मेवात और पलवल को छोड़कर) उच्च साक्षरता दर पाए गए हैं। बेहतर शिक्षा सुविधाओं की उपलब्धता के साथ-साथ आगे के अवसरों के लिए जागरूकता इस तथ्य को स्पष्ट करती है, जबकि उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में कृषि बेल्ट होने के साथ-साथ शिक्षा के प्रतिरोध के रूप में साक्षरता दर कम है। समाज का विशेष खंड मुस्लिम आबादी वाले जिलों मेवात और पलवल का सबसे दक्षिणी क्षेत्र सामाजिक और आर्थिक विकास की कमी के कारण साक्षरता दर में राज्य के बाकी हिस्सों से बहुत पीछे है। इसलिए शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों में लोगों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

असमानता सूचकांक का स्थानिक विश्लेषण

आम तौर पर असमानता का अर्थ है विचाराधीन परिणाम में असमानताएं जो सामाजिक-आर्थिक श्रेणियों, यौन विशेषताओं, धार्मिक आधार के संबंध में किसी विशेष समूह की कम देखभाल करने के अभ्यास के परिणामस्वरूप होती हैं। यह देखा गया है कि सीखने की सुविधा की उपलब्धता होने के बाद, ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को शहरी की तुलना में अनावश्यक सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं का अधिक अनुभव होता है। सीखने की प्रक्रिया में लैंगिक असमानता हमेशा चिंता का विषय रही है क्योंकि आमतौर पर दुनिया के अधिकांश हिस्सों में लड़कियों को शिक्षा के मामले में कम अवसर और ध्यान मिलता है।

राज्य ने शिक्षा के संबंध में लैंगिक पूर्वाग्रहों को कम करने में खुद को सुधारा है फिर भी वर्तमान में स्थिति ठीक नहीं कह रही है। 2001 में, जींद, हिसार, भिवानी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात और पलवल नाम के सात जिलों में सबसे अधिक असमानता देखी गई है, इसके बाद ग्यारह जिलों सिरसा, फतेहाबाद, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, झज्जर, गुड़गांव और फरीदाबाद के क्लस्टर में मध्यम मूल्य देखा गया है। । केवल तीन जिलों पंचकुला, अंबाला और यमुनानगर ने साक्षरता में कम लिंग अंतर दर्ज किया है (तालिका 2)। 2011 के जनमत सर्वेक्षण के दौरान, यह पाया गया है कि उच्च लिंग असमानता केवल दो जिलों, मेवात और पलवल से संबंधित है। कुल ग्यारह जिलों में मध्यम असमानता का दस्तावेजीकरण

तालिका 2: हरियाणा में साक्षरता दर और लैंगिक असमानता, 2001-2011

क्रमांक	जिला/राज्य	2001			2011			2001	2011
		व्यक्ति	पुरुष	महिला	व्यक्ति	पुरुष	महिला	लिंग असमानता सूचकांक	लिंग असमानता सूचकांक
1.	पलवल	59.19	75.10	40.76	69.32	82.66	54.23	0.371	0.277
2.	भिवानी	67.45	80.26	53.00	75.21	85.65	63.54	0.269	0.206
3.	गुड़गांव	78.51	87.97	67.49	84.7 0	90.46	77.98	0.188	0.111
4.	अंबाला	75.31	82.31	67.39	81.75	87.34	75.50	0.139	0.107
5.	हिसार	64.83	76.57	51.08	72.89	82.20	62.25	0.257	0.189
6.	झज्जर	72.38	83.27	59.65	80.65	89.31	70.73	0.225	0.169
7.	जींद	62.12	73.82	48.51	71.44	80.81	60.76	0.262	0.191
8.	रोहतक	73.72	83.23	62.59	80.22	87.65	71.72	0.194	0.145
9.	कैथल	59.02	69.15	47.31	69.15	77.98	59.24	0.232	0.181

10.	करनाल	67.74	76.29	57.97	74.73	81.82	66.82	0.179	0.140
11.	कुरुक्षेत्र	69.88	78.06	60.61	76.31	83.02	68.84	0.168	0.131
12.	महेंद्रगढ़	69.89	84.72	54.08	77.72	89.72	64.57	0.297	0.232
13.	मेवात	43.51	61.18	23.89	54.08	69.94	36.60	0.512	0.380
14.	पंचकूला	74.00	80.87	65.65	8.88	87.04	75.99	0.143	0.099
15.	सोनीपत	72.79	83.06	60.68	79.12	87.18	69.80	0.212	0.159
16.	यमुनानगर	71.63	78.82	63.39	77.99	83.84	71.38	0.147	0.114
17.	फरीदाबाद	76.29	85.14	65.63	81.70	88.61	73.84	.181	0.133
18.	फतेहाबाद	57.98	68.22	46.53	67.49	76.14	58.87	0.232	0.168
19.	पानीपत	69.17	78.50	57.91	75.94	83.71	67.00	0.200	0.155
20.	रेवाड़ी	72.25	88.45	60.83	80.99	91.44	69.57	0.259	0.198
21.	सिरसा	60.55	70.05	49.93	68.82	76.43	60.40	0.210	0.155
22.	हरियाणा	67.91	78.49	55.73	75.55	84.05	65.94	0.223	0.168

स्रोत: प्राथमिक जनगणना सार, हरियाणा 2001 और 2011

किया गया है जिसमें पांच जिले विशेष रूप से जींद, हिसार, भिवानी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी ने पिछली जनगणना की तुलना में 2011 में अपनी स्थिति में सुधार किया है। पंचकुला, अंबाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, रोहतक, गुड़गांव और फरीदाबाद जिलों में पुरुष-महिला शिक्षा में कम अंतर दर्ज किया गया है।

समग्र विश्लेषण से पता चलता है कि जिले मेवात (मुस्लिम बहुल) और पलवल ने पुरुष-महिला शिक्षा में अंतर को कम किया है, लेकिन असमानता सूचकांक की रैंकिंग में कोई बदलाव नहीं किया है और 2011 में नीचे से क्रमशः पहले और दूसरे स्थान पर 2001 में समान रूप से स्थान प्राप्त किया है, जबकि विडंबना यह है कि पंचकूला सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला, असमानता सूचकांक के मामले में पहले स्थान पर है, जो इस तथ्य के लिए एक श्रद्धांजलि हो सकती है कि जैसा कि राज्य की राजधानी से सटा होने के कारण जिले में महिलाओं के लिए शैक्षिक केंद्रों की बेहतर उपलब्धता के साथ-साथ स्कूली शिक्षा के खर्च को वहन करने की सुविधा और क्षमता भी है।

निष्कर्ष

सीखने में लैंगिक असमानता महिलाओं के जीवन के अन्य क्षेत्रों में भेदभाव के साथ जुड़ी हुई है। निश्चित रूप से, पुरुष महिला शिक्षा में स्थानिक भिन्नता को सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्र में शिक्षा और शैक्षणिक संस्थानों की उपलब्धता, पहुंच और सामर्थ्य के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। अध्ययन की समापन टिप्पणी हैं :-

- इसमें कोई शर्म की बात नहीं है कि हाल ही में राज्य ने समग्र साक्षरता में काफी सुधार किया है (1971 में 25.71 फीसदी से 2011 में 75.55 फीसदी) फिर भी महिला साक्षरता (65.94 फीसदी) पुरुष साक्षरता (84.05 फीसदी) की तुलना में पिछड़ रही है।
- राज्य में बड़े पैमाने पर अंतर-जिला भिन्नता है जहां जिला गुड़गांव 77.98 प्रतिशत की उच्चतम महिला साक्षरता के साथ शीर्ष पर है जबकि मेवात नीचे है जहां साक्षर महिला आबादी का अनुपात उच्चतम (36.60%) के आधे से भी कम है।
- यह देखा गया है कि साक्षरता में महत्वपूर्ण रूप से लैंगिक असमानता, 2001 (0.223) से 2011 (0.168) तक तेजी से घट गई, फिर भी जिला स्तर पर बड़े अंतर हैं और पाया गया कि आठ जिले (पंचकुला, अंबाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, रोहतक, गुड़गांव और फरीदाबाद) को छोड़कर पूरा हरियाणा मध्यम से उच्च लिंग असमानता की श्रेणी में आता है और मेवात और पलवल जिलों में स्थिति बदतर है।

तो कुल मिलाकर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि निस्संदेह साक्षरता में प्रगति विकास का सकारात्मक संकेत है फिर भी महिला साक्षरता को इस प्रगति से निपटने के लिए अधिक ध्यान और प्राथमिकता की आवश्यकता है।

अनुशंसाएँ

इस प्रकार यह कहा गया है कि सीखने की प्रक्रिया में लिंग आधारित असमानता को दूर करने की आवश्यकता है क्योंकि कई अध्ययनों से पता चला है कि महिला शिक्षा का विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक घटनाओं के साथ सीधा संबंध है और प्रभावी और सटीक निर्णयों के माध्यम से एक शिक्षित महिला विभिन्न क्षेत्रों में लड़कियों के खिलाफ भाई-भतीजावाद को रोकने के लिए और समाज की सामाजिक परीक्षाओं, बुराइयों और क्लैप्ट्रैप बाड़ के साथ हाथापाई करने के लिए अधिक कुशल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अख्तर एन, सुल्ताना सी, अहमद एन 2014। पश्चिम बंगाल में साक्षरता का स्थानिक-अस्थायी पैटर्न, 2001-11। इंडियन जर्नल ऑफ स्पैटियल साइंस, 5(2): 42- 48.
2. भारत की जनगणना 2001। प्राथमिक जनगणना सार, जनगणना संचालन के निदेशक, हरियाणा.
3. भारत की जनगणना 2011। प्राथमिक जनगणना सार, जनगणना संचालन के निदेशक, हरियाणा
4. चांदना आरसी 2004. जनसंख्या का भूगोल-अवधारणा, निर्धारक और पैटर्न। नई दिल्ली: कल्याणी पब्लिशर्स
5. फिन जे, रीस जे, डलबर्ग एल 1980। शैक्षणिक प्राप्ति में लिंग अंतर: प्रक्रिया। तुलनात्मक शिक्षा समीक्षा, 24(2):S33-S52.
6. मैकडॉगल एल 2000। उत्तर प्रदेश में साक्षरता में लिंग अंतर, विकेंद्रीकृत शैक्षिक योजना के लिए प्रश्न। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 35(19): 1649- 1658।
7. कुंडू ए, राव जेएम 1986। शैक्षिक विकास में असमानता: माप में मुद्दे, बदलती संरचना और इसके सामाजिक-आर्थिक संबंध भारत के विशेष संदर्भ के साथ। इन: मूनिस रज़ा (एड.): एजुकेशनल प्लानिंग-ए लॉन्ग टर्म पर्सपेक्टिव। नई दिल्ली:एनआईईपीए, पीपी.435-466.
8. मेहता जीएस 1990। शैक्षिक समानता: वास्तविकता या मिथक। इंडियन जर्नल ऑफ रीजनल साइंस, 22(1): 87-93
9. नाइक जेपी 1979। समानता, गुणवत्ता और मात्रा: भारतीय शिक्षा में मायावी त्रिभुज। शिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा, 25(2 और 3): 167-185।
10. शर्मा एम, कविता 2019। अंतर बनाम भेदभाव: भारत में शैक्षिक लिंग असमानता का दृश्य। जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एंड सोशल एंथ्रोपोलॉजी, 10(1-3): 1-11. डीओआई:10.31901/24566764.2019/10-1-3। 291.
11. शर्मा एम, कुमार एस 2018. हरियाणा में बच्चों के स्वास्थ्य की स्थिति के क्षेत्रीय आयाम। इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 9(11): 82-87। डीओआई: 10.5958/0976-5506.2018.01429.8
12. शर्मा एम, कुमार एस, कविता 2018। बेटियों का गायब होना या गर्भ से कब्र तक पक्षपात के चक्रव्यूह को छेदने में विफलता। मेडिको-लीगल अपडेट, 18(2): 211-218.डीओआई: 10.5958/0974-1283.2018.00163.9।
13. सोफर डीई 1980। भारत साक्षरता में लिंग असमानता। इन: डीई सोफर (एड।): एन एक्सप्लोरेशन ऑफ इंडिया: जियोग्राफिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन सोसाइटी एंड कल्चर। लंदन: लॉन्गमैन ग्रुप लिमिटेड, पीपी. 133-188।
14. स्ट्रॉमक्विस्ट एनपी 1997। नागरिकता के लिए साक्षरता: ब्राजील में लिंग और जमीनी स्तर की गतिशीलता। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस.
15. सुले बीएम, बाराकड़े ए जे 2012। महाराष्ट्र (भारत) में साक्षरता। भूविज्ञान अनुसंधान, 3(1): 88-91.
16. थॉमस वी, वांग वाई, फैन एक्स, 2001। शिक्षा असमानता को मापना: शिक्षा के गिनी गुणांक। पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर सीरीज 2525. विश्व बैंक।

17. तिलक जेबीजी 2008। उच्च शिक्षा: एक सार्वजनिक वस्तु या व्यापार के लिए एक वस्तु? उच्च शिक्षा के लिए प्रतिबद्धता या व्यापार के लिए उच्च शिक्षा की प्रतिबद्धता। संभावनाएं, 38(4): 449-466।
18. विश्व बैंक 1998। भारत में गरीबी को कम करना: अधिक प्रभावी सार्वजनिक सेवाओं के विकल्प। वाशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक।
19. टिंकर आई, ब्रैमसेन बीएम 1975। विकास में महिलाओं पर संगोष्ठी की कार्यवाही। इन: आई टिंकर, बीएम ब्रैमसेन (संस्करण): महिला और विश्व विकास। वाशिंगटन, डीसी: अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस, पीपी. 138 -218.
20. यूनेस्को 2006. सभी के लिए शिक्षा: जीवन के लिए साक्षरता। वैश्विक निगरानी रिपोर्ट, संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, पेरिस: फ्रांस।